वर्ष 8 अंक 29 जनवरी – मार्च 2017

मंडल में नई गाड़ियों का शुभारंभ

पूर्वोत्तर क्षेत्र से पूर्व क्षेत्र में धार्मिक रुचि के स्थानों पर भक्तों को ले जाने वाली पहली समर्पित पर्यटक रेलगाड़ी (ट्रेन संख्या 00561) ने 17 फरवरी, 2017 को कामाख्या जंक्शन से मालतीपतपुर तक के लिए अपना उद्घाटन यात्रा प्रारंभ किया। इस शुभ अवसर पर, रेल राज्य मंत्री श्री राजेन गोहांई और असम के माननीय मुख्यमंत्री श्री सर्वानंद सोनोवाल ने संयुक्त रूप से ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर यात्रा का शुभारंभ किया।

आस्था सर्किट टूरिस्ट रेलगाड़ी को हरी झंडी दिखलाते हुए माननीय रेल राज्य मंत्री, असम के माननीय मुख्यमंत्री, महाप्रबंधक पू.सी. रेल, मंडल रेल प्रबंधक, लामडिंग तथा अन्य अधिकारीगण।

माननीय रेल राज्य मंत्री द्वारा वीडियो लिंक के माध्यम से बराईग्राम–दुल्लभचेरा सेक्शन में नई रेल गाड़ी का शुभारंभ

31 मार्च 2017 को माननीय रेल राज्य मंत्री, श्री राजेन गोहाई ने मालीगॉव से वीडियो लिंक के माध्यम से असम के करीमगंज जिला के अंतर्गत बराईग्राम–दुल्लभचेरा सेक्शन में 29.40 किलोमीटर आमान परिवर्तित बी.जी. लाइन के लिए पहली रेलगाड़ी को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। बराईग्राम–दुल्लभचेरा सेक्शन के 29.40 किलोमीटर आमान परिवर्तित बी.जी. लाइन के साथ पूर्वोत्तर के संपूर्ण एम.जी. लाइन का बी.जी. लाइन में आमान परिवर्तन का कार्य पूरा हो गया।

मालीगॉव से वीडियो लिंक के माध्यम से रेलगाड़ी को हरी झंडी दिखलाते हुए माननीय रेल राज्य मंत्री तथा रेलवे के अधिकारीगण।

मौके पर आयोजित कार्यक्रम में बराईग्राम – दुल्लभचेरा सेक्शन में पहली रेलगाड़ी को हरी झंडी दिखलाते हुए लामडिंग मंडल के रेलवे के अधिकारीगण।

अगरतला – उदयपुर सेक्शन में अगरतला से नई रेलगाड़ी का शुभारंभ

अगरतला में रेलगाड़ी को हरी झंडी दिखलाते हुए माननीय मंत्रीगण तथा मंडल रेल प्रबंधक, लामडिंग

24 जनवरी,2017 को माननीय रेलमंत्री, श्री सुरेश प्रभु ने नई दिल्ली से वीडियो लिंक के माध्यम से अगरतला को गोमती के जिला मुख्यालय, उदयपुर के साथ जोड़ने वाली 44.76 किलोमीटर नई रेलवे लाइन के लिए रेलगाड़ी का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम के दौरान पूर्वोत्तर सीमा रेल के लामडिंग मंडल द्वारा अगरतला में आयोजित समारोह में राज्य के माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री, श्री बादल चौधुरी एवं राज्य के माननीय परिवहन मंत्री, श्री मानिक दे उपस्थित थे।

रेलवे संरक्षा आयुक्त, पूर्वोत्तर सर्किल, कोलकाता द्वारा निरीक्षण

बराईग्राम से दुल्लभचेरा तक के आमान परिवर्तित सेक्शन के निरीक्षण के शुभारंभ का एक दृश्य।

रेलवे संरक्षा आयुक्त, पूर्वोत्तर सर्किल, कोलकाता, श्री शैलेश कुमार पाठक ने 07 फरवरी 2017 को जिरीबाम से वांगईचुंगपाओ तक की नव निर्मित बड़ी लाइन का निरीक्षण किया। उन्होंने 11 मार्च 2017 को बराईग्राम से दुल्लभचेरा तक की आमान परिवर्तित बड़ी लाइन सेक्शन का निरीक्षण किया तथा 31 मार्च 2017 को उन्होंने उदयपुर से गरजी सेक्शन की नव निर्मित 9.26 किलोमीटर बड़ी लाइन सेक्शन का निरीक्षण किया। यह बड़ी लाइन पूर्वोत्तर सीमा रेल के अगरतला-साबरूम 114 किलोमीटर लंबी नई लाइन परियोजना का एक हिस्सा है। इस सेक्शन की विशेषता है कि इसमें कोई समपार फाटक नहीं है। इस सेक्शन में आम जनता को रेलपथ एवं स्टेशन को पार करने के लिए छः सड़क ऊपरी पुल तथा छः सड़क नीचले पुलों का निर्माण किया गया है।

जिरीबाम-वांगईचुंगपाओ तक की नव निर्मित बड़ी लाइन सेक्शन में निरीक्षण करते हुए रेलवे संरक्षा आयुक्त, पूर्वोत्तर सर्किल, कोलकाता, श्री शैलेश कुमार पाठक।

जिरीबाम से वांगईचुंगपाओ तक की नव निर्मित बड़ी लाइन के निरीक्षण के शुभारंभ का एक दृश्य।

महाप्रबंधक/पूर्वोत्तर सीमा रेल का न्यू हाफलांग-लामडिंग सेक्शन का वार्षिक निरीक्षण

महाप्रबंधक/पूर्वोत्तर सीमा रेल का लामडिंग मंडल के न्यू हाफलांग- लामडिंग सेक्शन का वार्षिक निरीक्षण 10 फरवरी 2017 को संपन्न हुआ।

महाप्रबंधक, पू.सी.रेल के न्यू हाफलांग स्टेशन पर आगमन का एक दृश्य।

महाप्रबंधक/पूर्वोत्तर सीमा रेल का लामडिंग मंडल के न्यू हाफलांग-लामडिंग सेक्शन में निरीक्षण का एक दृश्य।

महाप्रबंधक/पूर्वोत्तर सीमा रेल का लामडिंग मंडल के न्यू हाफलांग-लामडिंग सेक्शन में निरीक्षण का एक दृश्य।

विविध गतिविधियाँ

गणतंत्र दिवस 2017 के कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ

लामडिंग मंडल में नवागत अधिकारी

डा. शरत चंद्र के. : आपने 25 जनवरी 2017 को सहायक मंडल चिकित्सा अधिकारी, लामडिंग के पद पर कार्यभार ग्रहण किया है।

डा. अमल शर्मा : आपने 31 जनवरी 2017 को सहायक मंडल चिकित्सा अधिकारी, लामडिंग के पद पर कार्यभार ग्रहण किया है।

डा. तापस रूद्र पाल : आपने 26 जनवरी 2017 को सहायक मंडल चिकित्सा अधिकारी, धर्मनगर के पद पर कार्यभार ग्रहण किया है।

श्री सर्जन उपाध्याय : आपने 01 फरवरी 2017 को मंडल वित्त प्रबंधक, लामडिंग के पद पर कार्यभार ग्रहण किया है।

श्री संजीव पुष्कर : आपने 02 फरवरी 2017 को सहायक मंडल बिजली इंजीनियर, लामडिंग के पद पर कार्यभार ग्रहण किया है।

श्री एम. के. मीना : आपने 06 फरवरी 2017 को सहायक मंडल इंजीनियर, जागीरोड के पद पर कार्यभार ग्रहण किया है।

डा. आर. आर .एस. नायक : आपने 17 फरवरी 2017 को सहायक मंडल चिकित्सा अधिकारी, बदरपुर के पद पर कार्यभार ग्रहण किया है।

श्री नीरज कुमार : आपने 17 फरवरी 2017 को सहायक मंडल इंजीनियर, हाफलांग के पद पर कार्यभार ग्रहण किया है।

डा. अभिषेख राहा : आपने 20 फरवरी 2017 को सहायक मंडल चिकित्सा अधिकारी, बदरपुर के पद पर कार्यभार ग्रहण किया है।

श्री अंजनी कुमार : आपने 27 फरवरी 2017 को सहायक कार्मिक अधिकारी/।।।/ लामडिंग के पद पर कार्यभार ग्रहण किया है।

डा. डोड्डी अविनाश कुमार : आपने 27 फरवरी 2017 को सहायक मंडल चिकित्सा अधिकारी, बदरपुर के पद पर कार्यभार ग्रहण किया है।

डा. येरिकेला वेंकेटेसु : आपने 09 मार्च 2017 को सहायक मंडल चिकित्सा अधिकारी, बदरपुर के पद पर कार्यभार ग्रहण किया है।

श्रीमती अनिमा सेनगुप्ता : आपने 24 मार्च 2017 को सहायक नर्सिंग अधिकारी, लामडिंग के पद पर कार्यभार ग्रहण किया है।

लामडिंग मंडल में आप सभी अधिकारियों का हार्दिक स्वागत है।

कार्मिक कल्याण

जनवरी–मार्च 2017 के दौरान सेवानिवृत्ति के कुल 132 मामलों का निपटारा किया गया,

144 अभ्यर्थियों को कुल ₹ 19,84,200/– की तकनीकी छात्रवृत्ति प्रदान की गई,

128 कर्मचारियों को कुल ₹ 2,76,275/– चश्मा सहायता प्रदान की गई,

कृत्रिम दन्तावली हेतु 1 कर्मचारी को कुल ₹ 2,500/– की सहायता प्रदान की गई तथा

लम्बी बीमारी से पीड़ित कुल 10 रेल कर्मचारियों को कुल ₹ 6,44,050/– की सहायता प्रदान की गई।

अवधि के दौरान लामडिंग मंडल में समूह 'ग' में कुल 7 तथा समूह 'घ' में कुल 18 अभ्यर्थियों को नियुक्ति प्रदान की गई।

सेवानिवृत्ति बैठक का एक दृश्य।

शहीद दिवस का पालन

30 जनवरी 2017 को संपूर्ण मंडल में हमारे राष्ट्रपिता को सम्मान देने के लिए दो मिनट का मौन रखकर शहीद दिवस का पालन किया गया।

पूर्वोत्तर का एक राज्य मणिपुर एक परिचय

व.मं.इंजी./समन्वय, लामडिंग
लामडिंग मंडल

पूर्वोत्तर भारत के हरे भरे कोने में स्थित एक छोटा सा राज्य है मणिपुर। मणिपुर का शाब्दिक अर्थ 'आभूषणों की भूमि' है। इस राज्य के पूर्व में म्यांमार, उत्तर-पश्चिम दिशा में नागालैंड, दक्षिण में मिज़ोरम तथा पश्चिम में असम का कछार जिला है। मणिपुर का इतिहास बहुत दिलचस्प है। सन् 1891 में पहले एंग्लो-मणिपुरी युद्ध के बाद यह राज्य ब्रिटिश शासन के अधीन आया। सन् 1947 में भारत की आजादी के बाद मणिपुर संविधान अधिनियम बनाया गया, जिससे राज्य में एक लोकतांत्रिक सरकार बनाई जा सके। 21 जनवरी 1972 को मणिपुर को पूर्ण राज्य का दर्जा मिला। मणिपुर को मितेलिपक, कंगलेपक और मैत्रबक जैसे नामों से जाना जाता रहा है।

मणिपुर की भौगोलिक स्थिति दर्शनीय है। आरामदायी मौसम, प्राकृतिक दृश्य और दर्शनीय स्थल राज्य को पर्यटकों के लिए एक आकर्षक स्थान बनाते हैं और वे यहाँ बार-बार आना चाहते हैं। यह राज्य जैव विविधता से भरपूर है और यहाँ शांत वनों की हरियाली बड़े-बड़े क्षेत्रों तक फैली हुई है। यहाँ हर पहाड़ के बीच में कोई न कोई नदी बहती हैं। इम्फाल नदी यहाँ की प्रमुख नदी है। यहाँ अनेक दुर्लभ प्रकार के औषधीय गुणों वाले पेड़ पौधे पाए जाते हैं जैसे टेक्सस बकाटा, जीन सेंग आदि। यह अनेक दुर्लभ ऑर्किड तथा फर्न का भी घर है। मणिपुर में सिरोय लिली पाई जाती है, यह एक ऐसा फूल है जो दुनिया में और कहीं नहीं पाया जाता। जूको घाटी अनेक संकटापन्न प्रजातियों का घर है और यहां दुर्लभतम डूज़ो लिली पाई जाती है। मणिपुर पृथ्वी पर एक मात्र ऐसा स्थान है जहाँ ब्रो एंट लर्ड हिरण पाया जाता है जिसे स्थानीय भाषा में संगाई कहते हैं। इस क्षेत्र को 1997 में नेशनल पार्क घोषित किया गया। यह एक अनोखी भौतिक विशेषताओं वाला पार्क है जहाँ लगभग पूरा पार्क पानी की सतह के नीचे डुबा है और जहाँ वनस्पतियों के टुकड़े गुच्छाओं में बनकर तैरते दिखाई देते हैं जैसे घास, झाडियां और मिट्टी जिसे फुमडी कहते हैं। किबुल लामजाओ नेशनल पार्क के अलावा यांगो पोकपी-लोकचाओ वन्य जीवन अभयारण्य है। यह चंदेल जिले में भारत-मलेशिया के भौगोलिक जंतु क्षेत्र में स्थित है। यहाँ मलेशिया का सन बियर घुमता देखा जा सकता है।

मणिपुर के लोकटक झील का एक दृश्य।

मणिपुर के चुडाचांदपुर जिले के दक्षिणी घाटी में विश्व प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण लोकटक झील है। इस झील के दक्षिणी किनारे पर कैबुल लमजाओ एक द्वीप उद्यान स्थित है जो विश्व के दुर्लभ प्राणी – संगाई नामक हिरण का निवास स्थान है।

यहाँ तीन प्रमुख जनजातियाँ निवास करती हैं। घाटी में मीतई जनजाति रहती है तो नागा और कूकी-चिन जनजातियाँ पहाड़ियों पर रहती हैं। प्रत्येक जनजाति वर्ग की खास संस्कृति और रीति-रिवाज हैं जो इनके नृत्य, संगीत व पारंपरिक प्रथाओं से दृष्टिगोचर होता है। मणिपुर के लोग कलाकार होते हैं साथ ही सृजनशील होते हैं जो उनके द्वारा तैयार खादी व दस्तकारी के उत्पादों में झलकती है। ये उत्पाद विश्वभर में अपनी डिज़ाइन, कौशल व उपयोगिता के लिए जाने जाते हैं।

अपनी विविध वनस्पतियों व जीव-जंतुओं के कारण मणिपुर को ''भारत का आभूषण'' के नाम से संबोधित किया जाता है। लुभाने वाले प्राकृतिक दृश्यों, में विलक्षण फूल-पौधे, निर्मल वन, लहराती नदियां, पहाड़ियों पर छाई हरियाली शामिल है। इन सबके अलावा पर्यटकों के लिए कई आकर्षण हैं जो राज्य में पर्यटन के विकास के लिए उत्कृष्ठ अवसर प्रदान करता है।

हथकरघा उद्योग राज्य का सबसे बड़ा कुटीर उद्योग है। यहाँ यह उद्योग अनादि काल से फल-फूल रहा है। मणिपुर के प्रमुख हथकरघा उत्पाद साड़ी, चादर, पर्दे, फैशनवाले कपड़े, स्कार्फ व तकिए के कवर आदि है। अधिकांश जुलाहे जिन्हें हुनर व महीन डिजाइनिंग के लिए जाना जाता है। वे वांग खाई बायोन कांपू, कोंगमान, खोंग मैन उल्लालऊ आदि से हैं जो उत्कृष्ट रेशम आदि उत्पाद मदों के लिए प्रसिद्ध हैं। मणिपुरी कपड़े व शालों की राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय बाजारों में काफी मांग है।

देश की विभिन्न हस्तशिल्प कलाओं में राज्य के हस्तशिल्प उद्योग का अनूठा स्थान है। इसके अंतर्गत बेंत व बांस के बने उत्पादों के साथ-साथ मिट्टी के बर्तन बनाने की संस्कृति भी शामिल है। मणिपुर में मिट्टी के बर्तन बनाने की प्रथा काफी पुरानी है और यह उद्यम मुख्यतः एंड्रो, सिकमाई, चौरन, थोगजाओ, नुंगवी व सेनापति जिले में किया जाता है। चूंकि बांस व बेंत काफी मात्रा में उपलब्ध है, टोकरी बुनना यहाँ के लोगों का लोकप्रिय व्यवसाय बन गया है। घरेलू के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय बाजारों में इन सभी उत्पादों की काफी मांग है।

मणिपुर की यात्रा में सैलानियों की रुचि की कई जगहें हैं जिसमें स्वदेशी संस्कृति और राज्य की परंपरा की झलक मिलती है। मणिपुर में नैसर्गिक सौंदर्य की भरमार है जिससे कई सैलानी इस प्रांत की ओर आकर्षित होते हैं। हरे भरे मैदान, सुंदर नज़ारे और सुहावना मौसम इस राज्य की पहचान है। यहाँ कई स्वदेशी जनजातियाँ हैं, जिनकी अपनी अनूठी संस्कृति और पारंपरिक विरासत है। मणिपुर राज्य किसी भी यात्री को इसकी अनूठी पारंपरिक संस्कृति और प्रकृति को जानने का मौका देता है।

मणिपुर की राजधानी इंफाल पूर्वोत्तर भारत की एक जानीमानी टूरिस्ट प्लेस है। पर्यटन और दूसरे कई उद्योगों के बढ़ने से आधुनिक इंफाल में कई बदलाव आए हैं। यह एक छोटा शहर है जहां पहुंच कर आप महसूस करते हैं कि जैसे आप किसी दूसरी ही दुनिया में आ गए हों। इसकी सुंदर घाटियां और लैंडस्केप आपको खूबसूरत और यादगार अनुभव देते हैं। इस शहर को देश के कुछ सबसे पुराने शहरों में से एक माना जाता है।

अच्छी परिवहन व्यवस्था के कारण ज्यादातर पर्यटक इस राज्य में आने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। मणिपुर की यात्रा में सैलानियों की रुचि की कई जगहें हैं जिसमें स्वदेशी संस्कृति और राज्य की परंपरा की झलक मिलती है। मणिपुर में नैसर्गिक सौंदर्य की भरमार है जिससे कई सैलानी इस प्रांत की ओर आकर्षित होते हैं। मणिपुर में एक बेहतरीन हवाई, सड़क और रेल व्यवस्था है। जहाँ तक रेलवे कनेक्टिविटी का सवाल है, एनएच 39 राज्य के लिए सुरक्षित कनेक्टिविटी सुनिश्चित करता है और इसका रेलहैड नागालैंड के दीमापुर में स्थित है। जिरीबाम और वंगाईचुंगपाऊ रेलवे स्टेशन, इंफाल के लिए रेलवे कनेक्टिविटी स्थापित करता है। जहाँ तक सड़क संपर्क का सवाल है मणिपुर में तीन राष्ट्रीय राजमार्ग हैं – एनएच 150, एनएच 53 और एनएच 39– इन तीन राष्ट्रीय राजमार्गों का सड़क संपर्क को बढ़ाने में बहुत योगदान है। राज्य के सड़क संपर्क को बेहतर करने के प्रयास में सौराष्ट्र-सिलचर सुपर हाइवे परियोजना को मोरेह तक बढ़ाया गया। यह एक तथ्य है कि यदि मोरह से थाईलैंड के माई सोत तक सड़क बन जाए तो मणिपुर राज्य को भारत के दक्षिण एशिया के प्रवेश द्वार का दर्जा मिल जाएगा। वास्तव में मणिपुर राज्य किसी भी यात्री को इसकी अनूठी पारंपरिक संस्कृति और प्रकृति को जानने का मौका देता है।

– संजय कनौजिया

संरक्षक
प्रमोद कुमार जैन
मंडल रेल प्रबंधक

मुख्य संपादक
संजय नैय्यर
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादन एवं सहयोग
संजय कनौजिया
वरिष्ठ मंडल इंजीनियर/समन्वय
आर. के. कोईरी
राजभाषा अधिकारी